

गिल्लू



लेखिका



- महादेवी वर्मा का जन्म 26 मार्च 1907 को होली के दिन उत्तर प्रदेश के एक अमीर परिवार में हुआ था। सात पीढ़ियों के बाद महादेवी जी के रूप में पुत्री का जन्म हुआ था। घर की देवी मानकर इनका नाम महादेवी वर्मा रखा गया। उन्होंने बहुत सी कहानियां लिखी। उन्हें जीव - जंतु, पशु - पक्षियों से बहुत प्रेम था। उसी पर आधारित है यह कहानी – “गिल्लू”



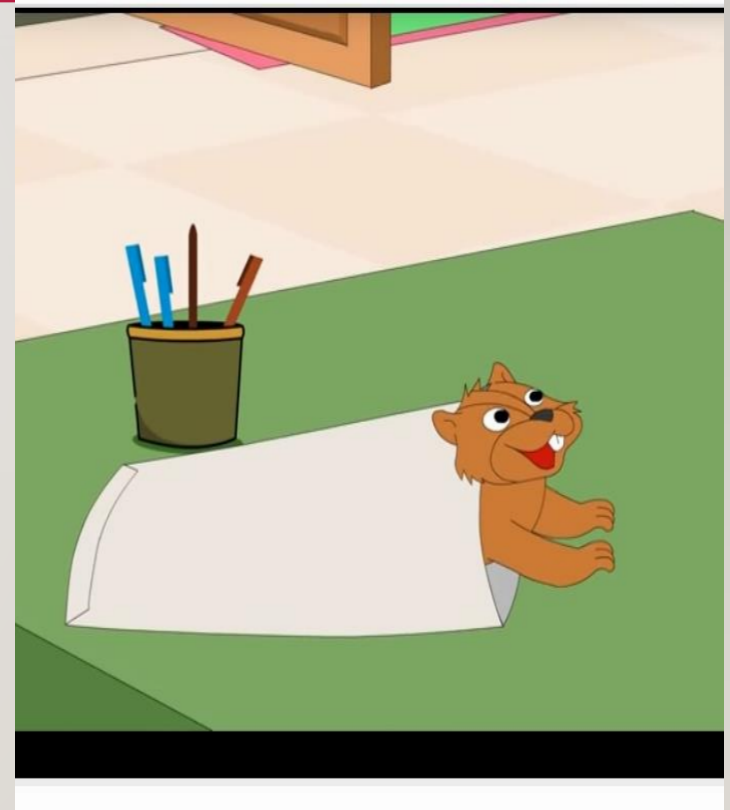
-
- एक दिन लेखिका ने खिड़की से देखा कि गमलों के बीच एक गिलहरी के बच्चे को चोंच मार - मार कर कौवों ने घायल कर दिया। वह बेचारा अचेत अवस्था में था । लेखिका उसे उठाकर कमरे में ले आई । घाव साफ करके महरम लगाई । रुई से दूध व पानी पिलाया । दो-तीन दिन में वह ठीक हो गया ।



- अब लेखिका ने इसका नाम रखा गिल्लू। गिल्लू बहुत ही तेज था। वह सारा दिन लेखिका के आसपास मंडराता रहता। घर के सभी सदस्य उसे देख कर खुश होते थे। लेखिका ने फूल रखने वाली डलिया को तार से खिड़की पर लटका दिया वहीं 2 वर्ष तक गिल्लू का घर रहा ।



- जब लेखिका लिखने बैठती तो उसका ध्यान आकर्षित करने के लिए उसके पैर पर आकर सर्र से पर्दे पर चढ़ जाता। यह क्रम तब तक चलता रहता जब तक लेखिका उसे पकड़ने के लिए ना उठती। वह उसे पकड़कर एक लिफाफे में ऐसे रख देती कि उसके अगले दो पंजे व मुंह लिफाफे के बाहर रहता। वह चिक – चिक करता तो लेखिका उसे काजू या बिस्कुट दे देती। वह उन्हें कुतर - कुतर कर खाता।



- फिर गिल्लू के जीवन का प्रथम वसंत आया । बाहर की गिलहरियां खिड़की के पास आकर चिक – चिक करने लगती। गिल्लू भी उन्हें अंदर से निहारता रहता । तब लेखिका को लगा कि इसे आजाद कर देना चाहिए। लेखिका ने कीलें निकालकर जाली का एक कोना खोल दिया। अब गिल्लू जाली से बाहर चला जाता और लेखिका के कॉलेज से आने पर जाली के रास्ते कमरे के अंदर आ जाता ।



- अब गिल्लू बहुत शैतान हो गया था । लेखिका को चौंकाने के लिए कभी पर्दे की चुन्नट में, फूलदान के फूलों में और कभी सोनजुही की लता में छुप जाता । वह लेखिका की थाली में बैठने लगता। लेखिका ने उसे सिखाया कि किस तरह थाली के बाहर बैठकर खाना है । काजू ना मिलने पर वह दूसरा भोजन ना खाता या उसे झूले से नीचे फेंक देता।



- लेखिका मोटर दुर्घटना में घायल होने के बाद अस्पताल से जब घर आई तो वह बिस्तर पर आराम करने के लिए लेटी रहती । गिल्लू उसके सिरहाने बैठ कर उसके सिर और बालों को अपने पंजों से सहलाता रहता । जब वह हट जाता तो लेखिका को लगता कि परिचारिका हट गई है ।



- उन दिनों उसने अपना प्रिय भोजन काजू भी बहुत कम खाया । अब गर्मियों में कमरे के अंदर लेखिका के पास ही रहता । उसने गर्मी से बचने का उपाय सोच लिया था। वह लेखिका के पास रखी सुराही पर लेट जाता। इस प्रकार समीप भी रहता और ठंडक में भी रहता।



- गिलहरियों की जीवन अवधि दो साल से अधिक नहीं होती। उसका अंत समय आ ही गया था । उसने दिनभर कुछ नहीं खाया । बाहर भी नहीं गया। रात में इतनी यातना में भी बिस्तर पर आकर ठंडे पंजों से लेखिका की वही उंगली पकड़ ली, जो उसने पहले दिन पकड़ी थी । लेखिका ने हीटर से गर्मी दी लेकिन वह किसी और जीवन में जाने के लिए सो गया । उसकी समाधि सोनजुही के नीचे बनाई गई ।

